

आशा सरकाथि

2641

ASHA ARCHIVES

ॐ नमोः श्री गुरु वज्र सत्तायः ॥ ॥ नृपां गुरु यात नमस्कार
यानाः गुरुमण्डल दने ॥ ॥ नृपांः स्वक न्वचायया वाकेः
॥ ॥ ॐ गर्भ संशोधने स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ हीं अमृतं जीवन्ते
स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हृदये स्वाहा ॥ ३ ॥ ह्रसः हाहा यायया वाके ॥ ॥
काय विशोधने स्वाहा ॥ ॥ पूजा नले हाहा यायया वाके ॥ पात्र
प्रक्षारणे स्वाहा ॥ ॥ धुलियाय धुंसेलि ॥ ॥ पूजा नः धिया संक
ल्प यायया वाके वेने ॥ ॥ ॐ नमो भगवते पूष्पकेतु राजा
यः तथागता यार्हन्ते संभ्यस्तं बुद्धाय ॥ तथा ॥ ॐ पूष्पे २
महापूष्पेः स्रपूष्पेः पूष्पः संज्ञवेः पूष्पं पूष्पाव कीर्त्ये स्वा

स॥६॥०॥ दनपतिः मम यथा नाम ध्ययेत्य॥ इह जन्मनि
 वाः पूर्वजन्मनी शान्ता शान्त कृतः दशा कुशलादि सर्वपाप
 मोचनार्थं॥ सर्वसत्त्व प्राणि जगत्ससार उद्धार कामनार्थं
 ॥ भगवन् श्रीमत् श्रीश्री बुद्ध धर्म संघ भद्राक्ष प्रित्याय
 ३ ग्र॥ उपोषठ व्रतकर्मणि॥ गुरुमण्डल पूजाकर्तुः इदं पुष्प
 भाजनं संकल्पयामि॥ ॥ धनः पूजाभादस्वकः अन्याय॥१॥
 वाके वीने॥ आदौ कल्याणं मध्यो कल्याणं पर्यवसानं कल्या
 णं स्वर्घं स्रव्यं जन केवलं परिपूर्णं परिशुद्धं पर्यवदात ब्रह्म
 चर्यं संप्रकाशयति स्म॥ ० ॥ धनं लि जाकिजोनाः हाज पाव

चोने॥ गुरुया तोत्रवोने॥ ० ॥ ॐ नमः श्रीगुरु वज्रसत्त्वाय॥
 वंद्य श्रीवज्र सत्त्वं शुचनवर गुरुं सर्वबुद्धो भवतं नाना रूपे नये
 नं तिमिर भयहरं निर्मितं मेरुसम्भवं॥ धर्माधार भुनीनां जि
 नवर भुजागं मण्डलं वज्रधातुं॥ सर्वा नन्दैक रूपं सहज सूरव
 मयः देहिना मोक्षहेतुम्॥ गुरुबुद्धः गुरुधर्मः गुरुसंघ स्तब्ध
 वच॥ गुरुवज्र धरश्चैव गुरुसर्वान्नमाम्याह॥ ० ॥ धनं लिः शं
 ख पूजायाय॥ लंख शोधनयाय॥ वं वं जोदके अमृतं भवन्तु स्वा
 हा॥ ॥ लघले जाकी लंख पाश्चाद्यतयवाके॥ ॥ वरुणादि नवना
 जेभ्यः पाद्यं प्रतीह स्वाहा॥ ॥ धनं लिः स्वां वोय॥ ॥ ॐ वरु

णय स्वाहा ॥ अनंताय स्वाहा ॥ बालसूकीय स्वाहा ॥ तक्षकाय स्वा
 हा ॥ पद्माय स्वाहा ॥ महापद्माय स्वाहा ॥ शंखपालाय स्वाहा ॥ कर्को
 टकाय स्वाहा ॥ कूलिकाय स्वाहा ॥ पंचो पचार पूजायाय ॥ ॥ व
 ज गन्धे स्वाहा ॥ वस्ते स्वाहा ॥ पूष्पे स्वाहा ॥ धूपे स्वाहा ॥ दीपे स्वा
 हा ॥ नैवेद्य स्वाहा ॥ ॥ स्तोत्रयायः ॥ वरुणदि नवनागान् सप्त
 फणं विचरितान् ॥ मकरस्तान् महाशान्तां जलाधिपां नमा
 म्यहम् ॥ ॥ धनंलि गुरुमण्डले जाकिलंख हायका तयया
 वाके ॥ ॥ ॐ यथा हिजा तमात्रेण स्नापिता तथाहं स्नापयि
 ष्यामि शुद्धं दिव्यं वारिण ॥ ॐ आः सर्वं तथागत अभिषे

क समये श्रीहं ॥ ॥ तोताः हस्त हाहायाना ॥ हाकनं न्वचा
 य ॥ ॥ ॐ हीं अमृतं जीवन्ते स्वाहा ॥ ॐ हृदय स्वाहा ॥
 काय विशोधने स्वाहा ॥ ॐ प्रोक्षणं प्रतीह स्वाहा ॥ ॥ पूजान्न
 लेः लखं हाहायानाः हाकनं पूजान्न धिय ॥ वाके ॥ ॥ ॐ न
 मो भगवते पूष्पकेतु राजाय तथागत यार्हने सम्यक्सं बुद्धा
 य ॥ तद्यथा ॥ ॐ पूष्पे २ महापूष्पे स्रपूष्पे पूष्पसं भवे पू
 ष्पं पूष्पाव कीर्णे स्वाहा ॥ ॥ पूजान्न अन्याय ॥ ॥ धनंलि
 अंगन्यास ॥ ॥ त्रिकाया विष्टान ॥ तीरः कथुः नूगः लाहानं
 धिययाः वाके ॥ ॥ ॐ आः हं ॥ वने ॥ ॥ धनंलिः जगत्

लाहातं स्वांजोनाः खरगु लाहातं चक्रनाः जवुंः खवंः वाहालं
 तिनाछायगु वाके ॥ ॐ सर्व पापान्य पनयहुं ॥ ॥ पापद
 को वांछाया चक्रा जापेगु ॥ ॥ हाकनं स्वांछकु आसन्तय
 ॥ वाके ॥ ॐ तिष्ठ वज्रासने स्वाहा ॥ ॥ हाकनं सीलसंः स्वांछ
 कुः तारंतय ॥ वाके ॥ ॐ मणि धरी वज्रीणि महाप्रति सौः रत्न
 मां हुं फट् स्वाहा ॥ ॥ धनंलि मंदले सिन्धुलंतिका पूगु ध
 मं तिय ॥ वाके ॥ ॐ तिलक विन्दुवनं प्रतीष्ट स्वाहा ॥ ॥
 लाहाचाय ॥ हस्तसोधने स्वाहा ॥ ॥ धन मण्डले ॥ धालमण्ड
 ल धिले ॥ वाके ॥ ॐ प्रोक्षारे सर्व विघ्नाक्षारे ॥ वं आः हुं वज्र

नमो ॥ सुलेखे २ सर्वतद्या गत अधि तिष्ठं तु स्वाहा ॥ ॥
 धनंलि ॥ लाहात मण्डले कोपूया तय ॥ वाक्य ॥ ॐ दा
 नं गोमय मं वृणांच सहितंः शीलं च सन्मार्जनं शान्तिं सुद्र
 पिपीलिका पनयनं ॥ वीर्य ॥ क्रियो रथापनं ध्यानं त
 त् ध्यान मेकचिन्त करणः प्रज्ञा सुलेखे ज्वलाः ॥ ॥
 पारमिताः षडेवलनदेः कृत्वा मुनेर्मंडलंः भवति कनकवर्णः
 सर्वरोगै विमूक्तः सुखमनुज विशिष्टं चन्द्र वद्विप्ति कांति ॥ चत
 कनक सङ्घे जायते राजवंशः सुगत वरगृहे स्मिं कार्य कर्मा
 शि कृत्वा ॥ ॐ सुलेखे २ सर्वतद्यागत गुरु अधि तिष्ठं तु स्वाहा

॥ ० ॥ धनः स्वां तथा लाहा पूयका द्योय ॥ वाके ॥ ॐ चन्द्रार्क विम
 ले प्रतीद स्वाहा ॥ ॥ धनः लाहा वाय ॥ वाके ॥ हस्त सोधने स्वाहा ॥
 ॥ धनं लि जाकि आकाशे तिने ॥ वाके ॥ ॥ ॐ गुरु मण्डल सर्व
 विद्वां नुत्सारय हुं स्वाहा ॥ ॥ धन ध्यान ॥ गुरु ध्यान ॥ वो ते ॥
 ॥ ॥ ॐ मंत्राधिष्ठित भूमिमध्ये यैका रादि चतुर्वीज संज्ञा
 तं महान्नत वाय्वग्नि जल वनि स्रं कोरेण सम्यह मण्डलं
 रत्नसिंहासन स्थितः पद्म चन्द्रे श्रीवज्रसत्त्वं दिग्भूजैक मू
 र्खं शुक्ल वर्णं वज्रवज्र घंघ्राधरं विचित्राभरण भूषितं ॥ शिरसि
 ची वरधारणं इन्द्रनील वर्णं नमो असौ न्या लंकृतं मौलिनं

श्रीवज्रसत्त्व गुरु महारकं ध्यात्वा ॥ ० ॥ ॐ स्वज्ञान शुद्धा स
 र्व धर्माणि स्वज्ञान शुद्धा हुं ॥ शून्यता गान वज्रस्वज्ञाना मको
 हुं शून्यं विज्ञान्य ॥ धनं लि मण्डले जाकि न्यापुचो वाय ॥ वाके ॥
 ॐ ज. हुं. वं. हो ॥ कूस्मं जलिं नाथं ज्ञो मण्डले सुख
 पं न्यास ॥ ॥ ठाकनं जाकिलं रव पाद्य तय ॥ वाक्य ॥ ॥
 ॐ गुरु मण्डल महारके न्यः पाद्यार्घ्यं प्रतीद स्वाहा ॥ ॥
 धनं लि ॥ स्वानोय ॥ मध्ये स ॥ ॐ ह मध्ये मेरवे नमः ॥ के
 तय ॥ ॥ ॐ हां अघो मेरवे नमः ॥ ॥ चेतय ॥ ॥ ॐ हुं ऊ
 र्व मेरवे नमः ॥ ॥ सुसतय ॥ ॥ ॐ सुं सुमेरवे नमः ॥ ॥

पूर्वे ॥ यंपूर्व विदेहाय नमः ॥ ॥ दक्षिणे ॥ रंजं बूद्धीपाय नमः ॥ ॥
 पश्चिमे ॥ लंछर गोपावरीय नमः ॥ ॥ उत्तरे ॥ वंडत्तर कूह
 वे नमः ॥ ॥ अग्ने ॥ याउप दीपाय नमः ॥ ॥ नैरित्य ॥ राउप
 दीपाय नमः ॥ ॥ वायुवे ॥ लाउप दीपाय नमः ॥ ॥ इशाने ॥
 वाउप दीपाय नमः ॥ ॥ पिनेयागु चाके ॥ पूर्वे ॥ यंपूर्व गजरत्ना
 य नमः ॥ ॥ ६ ॥ रं प्रहस्य रत्नाय नमः ॥ ॥ प ॥ लं अस्वरत्ना
 य नमः ॥ ॥ ३ ॥ नं स्त्रीरत्नाय नमः ॥ ॥ अग्ने ॥ याचक्र
 रत्नाय नमः ॥ ॥ नै ॥ राखड्ग रत्नाय नमः ॥ ॥ वा ॥ ला
 मणि रत्नाय नमः ॥ ॥ ई ॥ वा सर्वानि धानेभ्यः नमः ॥ ॥

क

अचन्द्राय नमः ॥ ॥ आसूर्याय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीकृष्णसत्त्व
 गुरुवे नमः स्वाहा ॥ ॥ ० ॥ धनंलिः पंचोपचार पूजा ॥ पंचामृ
 तं स्नानयाके ॥ वाके ॥ ॥ पंचामृतं स्वाहा ॥ ॐ वज्रगंध्य स्वा
 हा ॥ वज्रसिंधु राजाय स्वाहा ॥ वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ वज्रधूपे स्वा
 हा ॥ वज्रदीपे स्वाहा ॥ वज्रनैवेद्य स्वाहा ॥ वज्रतांबूल प्रतिष्ठा
 स्वाहा ॥ ॥ तयलं देले ॥ ये धर्मावाः वाने ॥ ॥ ये धर्मा हेतु
 पूजावा हेतु स्तेषां तद्यागत ह्यवदत्तेषां च योतिरोध स्वंवा
 दि महाश्रमणः ॥ ॥ ० ॥ धनः तोत्रयाय ॥ ॥ ॐ नमो बुद्धायः गु
 रवे नमो धर्मायः तारणे नमः संघायः महत्तमे नमः ॥ ॐ आः

११

हूं श्रीमत् वज्रसत्त्व गुरुवर चरण कमलाब्ज नमोऽसम्यक्ज्ञाना
 वनासन कराय नमो हूं ॥ नमोऽस्तेषु र नमोनमः ॥ नमोऽस्त्यहं
 त्वा नमस्यामि गुरुनाथं प्रसिद्धमे ॥ यस्य प्रसाद कीर्णं स्तुरि
 ताह्वक नत्वरत्न प्रज्ञावा सपरिकीर्णं प्रहतां धकारा पश्यन्त्य
 नाविर दृशः सविरा समूचे ॥ नमस्कृति रियं गृ ज्ञास कराय
 त्रि न्यापि सततं नमः ॥ सर्वबुद्धं नमस्यामि धर्मं च जिनजा
 धितं ॥ संधं च शीलसं पन्त रत्नत्रय नमोऽस्तुते ॥ ॥ धनं
 लि रत्नमण्डल हायके ॥ स्वां जाकि लं रवतया हायकातय ॥
 मण्डले ॥ ॥ अष्टसुंग मयमेरु चतुर्दीपो पशोभितं ॥

ASMA ARCHIVES

2641

ገጽ ፩

सप्तारत्न समाकीर्णः ददेन्नृत्तर दायनीन् ॥ गुरुभ्यो वृद्ध
 धर्मैर्न्यः संघेभ्यश्च तथैव च ॥ आत्मानं नियन्ति यामि
 भावेन संपूर्णं रत्नमण्डलं ॥ ॥ धनंलि पापदेसनायाय
 कृतांजलि यानाचोने ॥ ॥ रत्नतय मे शरणं सर्वप्रति दिशा
 मेय अनुमोदे जगत्पुण्य वृद्धवाधौ दधेनमः ॥ आवो
 धौ शरणं यामि वृद्ध धर्म गणेत्तमे ॥ वाधौ चित्तं करो
 मेय स्वपरार्थं प्रसिद्धमे ॥ उत्पादयामि परमवर वाधि
 चारिकान् निमंत्र याम्यहम् ॥ सर्वसत्त्वान् दूष्टां च लिख्ये
 वर वाधि चारिकान् ॥ वृद्धो भवेयं जगता हिताय देशना

१३

नां सर्वपापानं पुण्यानां चानुमोदना कृतापाहारं चरि
 यामि आय्याष्टांग मूपोषठं ॥ कायकं त्रिविधं पापं वा
 चिकं चतुर्विधकं ॥ मानसं त्रिप्रकारं च तत्सर्वं देशयाम्य
 हम् ॥ ॥ धनंलि ॥ वज्रसत्त्वयागू ॥ जपयाय ॥ ॐ आः हुं
 ॥ ॥ धन वलिपूजा माय ॥ च्वेच्चंगू ज्वजासः जाकिलं
 ख हायका तय ॥ वाक्य ॥ ॐ ॥ अकारो मूरेवा सर्वध
 मा णामाद्यन्त्यन्नत्वात् ॥ हारति महायज्ञिणी सर्वपाप
 हरहर ॐ आः हुं फट् स्वाहा ॥ ॥ ज्वजासः स्वांवाय ॥ ॥

१४

ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा ॥ जमाय स्वाहा ॥ वहण्याय स्वाहा ॥ कू
 वेराय स्वाहा ॥ अग्नेय स्वाहा ॥ नैरित्ये स्वाहा ॥ वायुवेय स्वा
 हा ॥ इशानाय स्वाहा ॥ उर्ध्वब्रह्मणे स्वाहा ॥ अचो विष्णुवे स्वा
 हा ॥ चन्द्राय स्वाहा ॥ सूर्याय स्वाहा ॥ पृथिव्ये स्वाहा ॥ नागभ्यो १५
 स्वाहा ॥ असुरभ्य स्वाहा सर्वदिगं लोकपालभ्यो वज्रपूष्पं
 प्रतीष्ट स्वाहा ॥ ॥ धनंलिः पंचोपचार पूजा उच्यते तोत्रयाय
 ॥ ॥ इन्द्रादयो महावीरा लोकपाला महर्द्धिकाः ॥ दशदि
 श्च स्थिताः ॥ लोकपालं नमाम्यहं ॥ ॥ धनंलि वलिस
 लं स्व हायका तय वाक्यवोने ॥ ॥ ॐ इन्द्रस्तु वजी सहदे

व संद्यैः रिमंच गृहं तु वलिं विशिष्टं ॥ अग्निर्यमो नैरि
 ति ऋपतिश्च अपापतिर्वायु धनाधिपतिश्च ॥ ईशान
 ऋताधिपतिश्च ॥ देवा उर्ध्वं च चन्द्रार्क पितामहश्च ॥ देवा स
 मस्ता भूविय च नागाधराधरा ग्रहगणैः समेताः प्रतिवत्वे १६
 क निवेदयंतु स्वक स्वका स्वैव दिशास्तु व्रताः ॥ गृहं तु तदृश
 सगणैः समेताः सपूत्र दारा सगणैः समेताः ॥ पूष्पवलिः च
 प वलिं दीपवलिं विलेपनं च गृहं तु शुभं तु पिबंतु चैदं च
 इदं तत्कर्म सफलं जुगुप्सु ॥ ॥ धनंलि लाहा हा जोल पा

व॥ भूमापन॥ शताक्षर वेने॥ वज्रसत्त्व॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्व समय
 मन्दूपालय॥ वज्रसत्त्व त्वेनो प्रतिस्थो॥ इष्टो मे भव॥ सुतोयो मे
 भव॥ सुपोयो मे भव॥ अगुर के मे भव॥ सर्वसिद्धि मे प्रयच्छ
 सर्वकर्म सुचमे चिन्त॥ प्रियंकुत्सु॥ हूँ॥ ह॥ ह॥ ह॥ ह॥ ह॥ भगव
 न॥ सर्वतथागत॥ वज्रमामे॥ मुंच॥ वज्री भव॥ महारामय सत्त्व
 आः॥ ॥ हूँ फट् ॥ धनंति गुरुमण्डल विसर्जन॥ ॥ ॐ कृत्वे
 वं सर्वसत्त्वार्थं सिद्धिं दत्वा यथानुगा॥ गद्यध्वं बुद्धविषय॥ पून
 राय गमनाय च॥ ॐ आः हूँ इत्या॥ काशधानुं॥ गद्य र वज्रमण्ड
 लं विसर्जनं॥ ॥ स्वांतने द्रुयजुलभुजं॥ ॥ धनंति॥ बुद्ध

१२

धर्म॥ संघ॥ यातः पूजायाय गु॥ ॥ नृपां बुद्ध धर्म संघ
 मण्डल जूसां॥ अथवा॥ देवमूर्ति जूसां धिया अन्यायगु
 वाक्य॥ ॥ ॐ सर्वतथागता शांतं॥ सर्वतथागता लयं॥ सर्व
 धर्माग्र नैरात्म्य॥ देशमण्डल मुत्तम॥ ॥ धनजाकि स्व
 पूचो नोय वाक्य॥ ॥ ॐ नमो बुद्धाय॥ ॐ नमो धर्माय
 ॥ ॐ नमोः संघायः नमो नमः॥ ॥ धनः न्यास जापयाय॥ ॐ
 सर्वतथागत महायोगे धरे हूँ॥ ॐ ॥ ॐ आः प्रसादये हूँ॥ ॐ
 मणि पद्मे हूँ॥ १॥ धनंतिः धूपकेना निमंजना याय॥

१८

ॐ नमो भगवते श्रीमते श्री ३ कृष्ण धर्म संध्या भ्रातृणां ॥ इदं वज्र
धूपं निमंत्रयाम्यहम् ॥ ॥ भक्त त्रिलया ध्यानयाय मनसु
मंके ॥ ॥ ॐ स्वभाव शुद्धा.

१५

२०

੨੧

੨੨

੨੩

੨੪